खुश हुआ दीनू

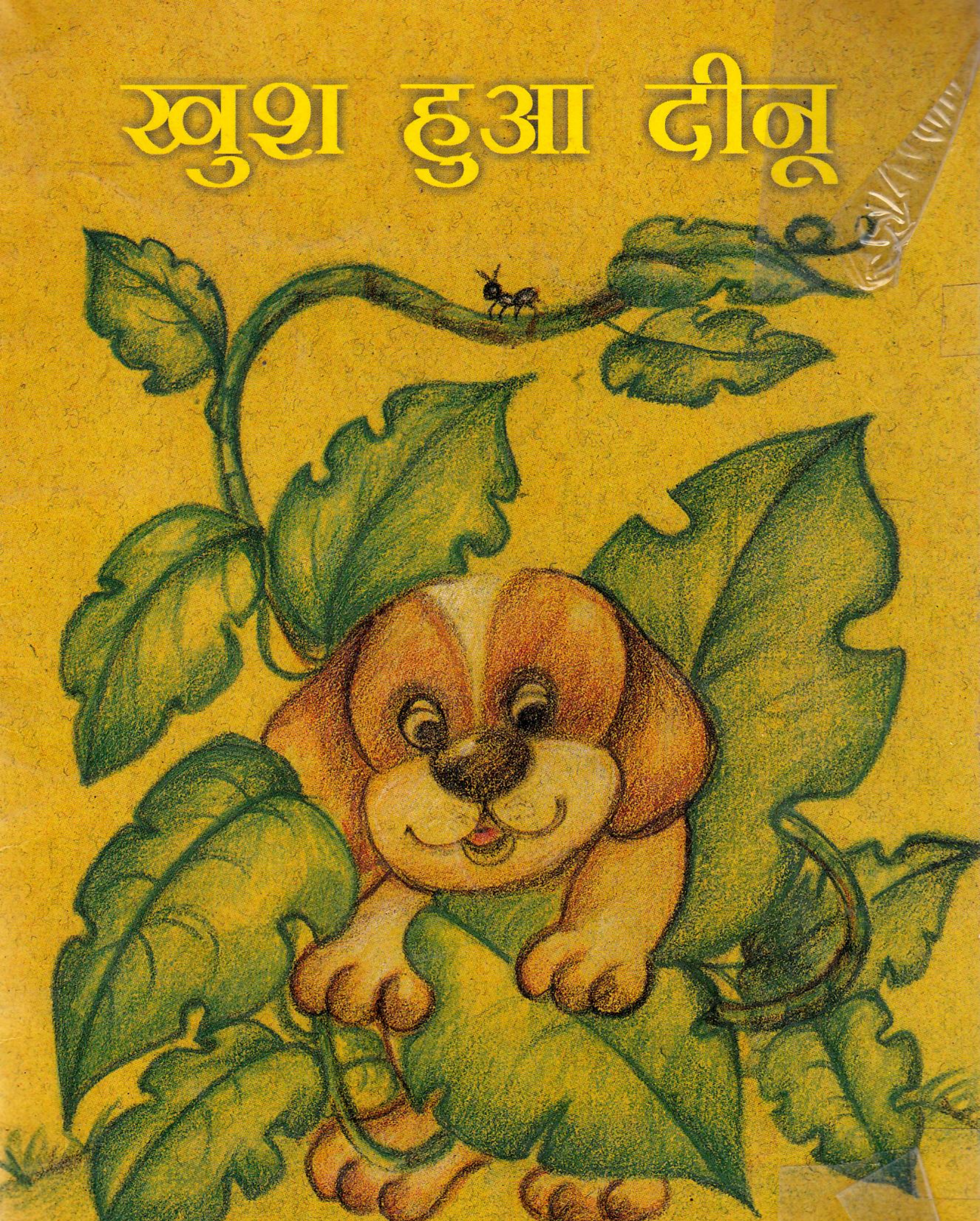

दीनू स्कूल से घर लौटा। मां-बापू तो खेत पर
काम के लिए गए हैं। अब क्या करे वह ?
जंगल की ओर निकल पड़ा। उसके पीछे शेरू ने
भी दौड़ लगा दी। बहुत दूर निकल आया।
थक गया तो एक पेड़ के तने से टिक कर
खड़ा हो गया। शेरू भी वहीं पास में
चिड़ियों के पीछे उछल रहा था।

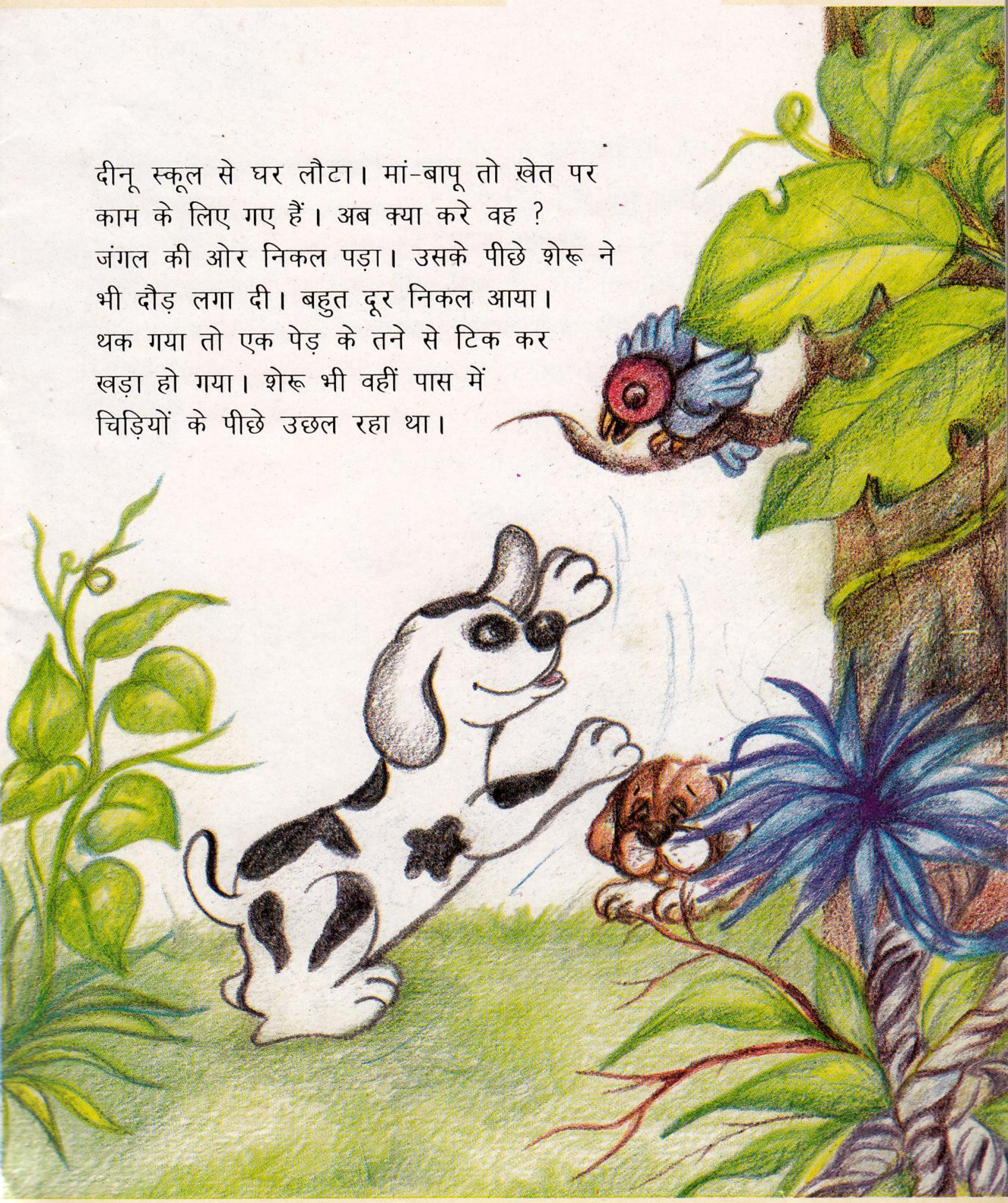

इन दिनों दीनू का मन किसी काम में नहीं
लग रहा है। कुछ अच्छा नहीं लग रहा है-
ना दोस्त, ना ही घर। घर में तो बस
दम घुटता है। कभी अम्मा की डांट तो कभी बापू
की फटकार। दोस्त हैं कि उसे कभी डरपोक कहेंगे तो
कभी दब्बू। दीनू समझ नहीं पा रहा है कि वह
क्या करे, किसके साथ खेले, कहां जाए।
बस एक आवाज लगाई शेरू को। अब लो जंगल में भी
वह ऊब गया। खेत की ओर चल दिया वह।

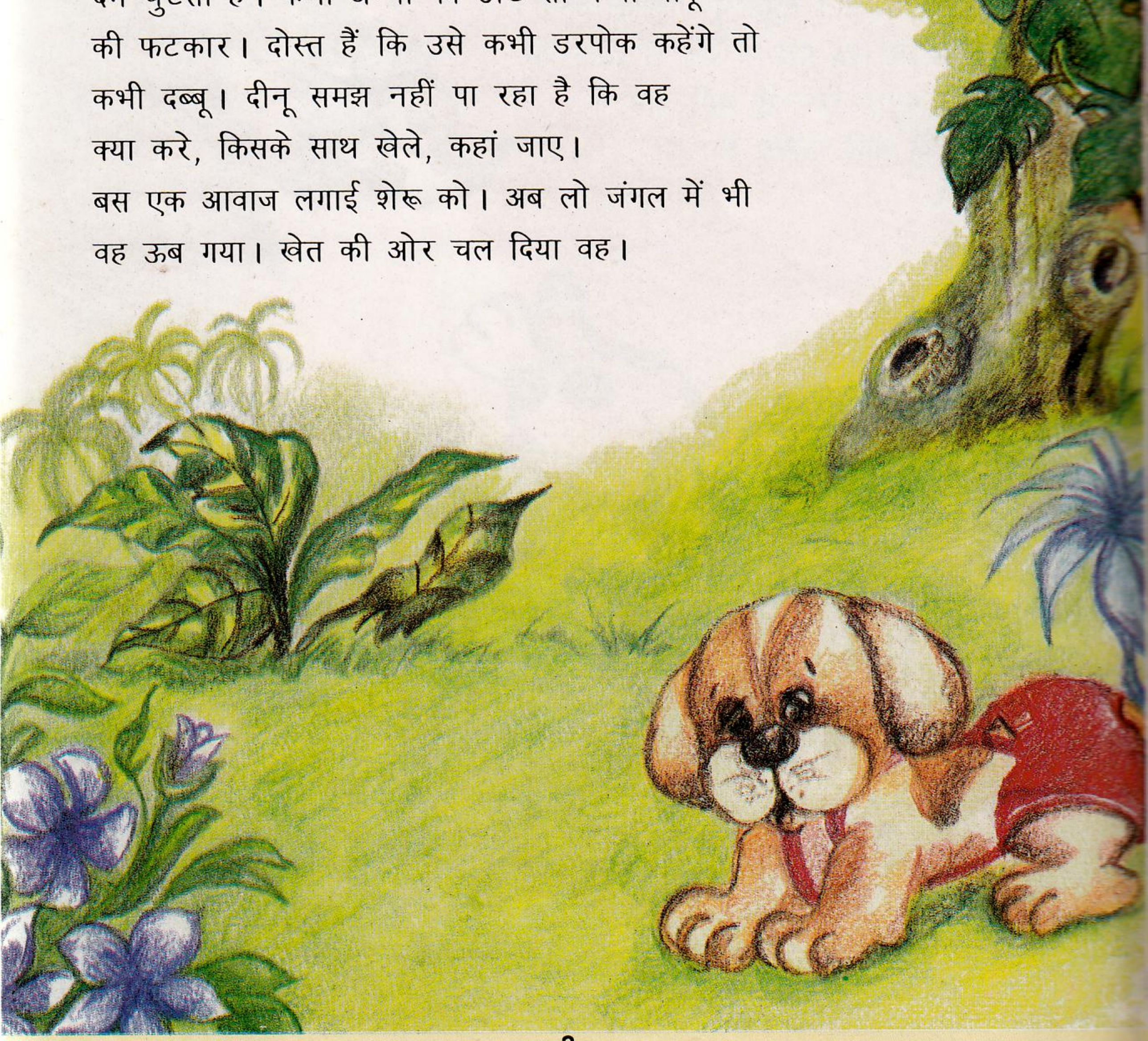

खेत में जहां तक नजर जाती है, सरसों के पीले-पीले फूल ही दिखते हैं। लाल, पीली, तिरंगी, . . . ना जाने कितने रंग की तितलियां मंडरा रही हैं फूलों पर । वह तितलियों के पीछे दौड़ने लगा। शेरू भी साथ-साथ कूदने लगा।

अरे वाह ! कितनी सुंदर तितली ! ! इंद्रधनुष की तरह सारे रंग हैं इसमें। दीने नू झपट्टा मारा। लगा कि हाथ में होगी तितली। पर वह तो थोड़ी सी ऊपर उड़ रही थी।

दीनू ने जैसे ही फिर हाथ उठाया, कहीं से आवाज आई, "अरे....रे.. ..रे... मुझे मत पकड़ो। मेरे पंख टूट जाएंगे।"

दीनू के हाथ वहीं रुक गए। उसने कुछ सोचा। फिर सरसों के फूल वाली एक डाल तोड़ ली।

उसने जैसे ही डाल को सिर से ऊपर उठाया, दो तितलियां उस पर भी मंडराने लगीं। धीरे से दोनों तितलियां डाल पर बैठ गईं । दीनू की खुशी का ठिकाना नहीं है । दीनू ने दोनों के नाम भी सोच लिए । वह जो पीले रंग की है उसका नाम, पीलू । और दूसरी वाली के तो कितने सारे रंग के धब्बे हैं ! उसका नाम कबरी । बड़ा मजा आएगा इनके साथ खेलने में।

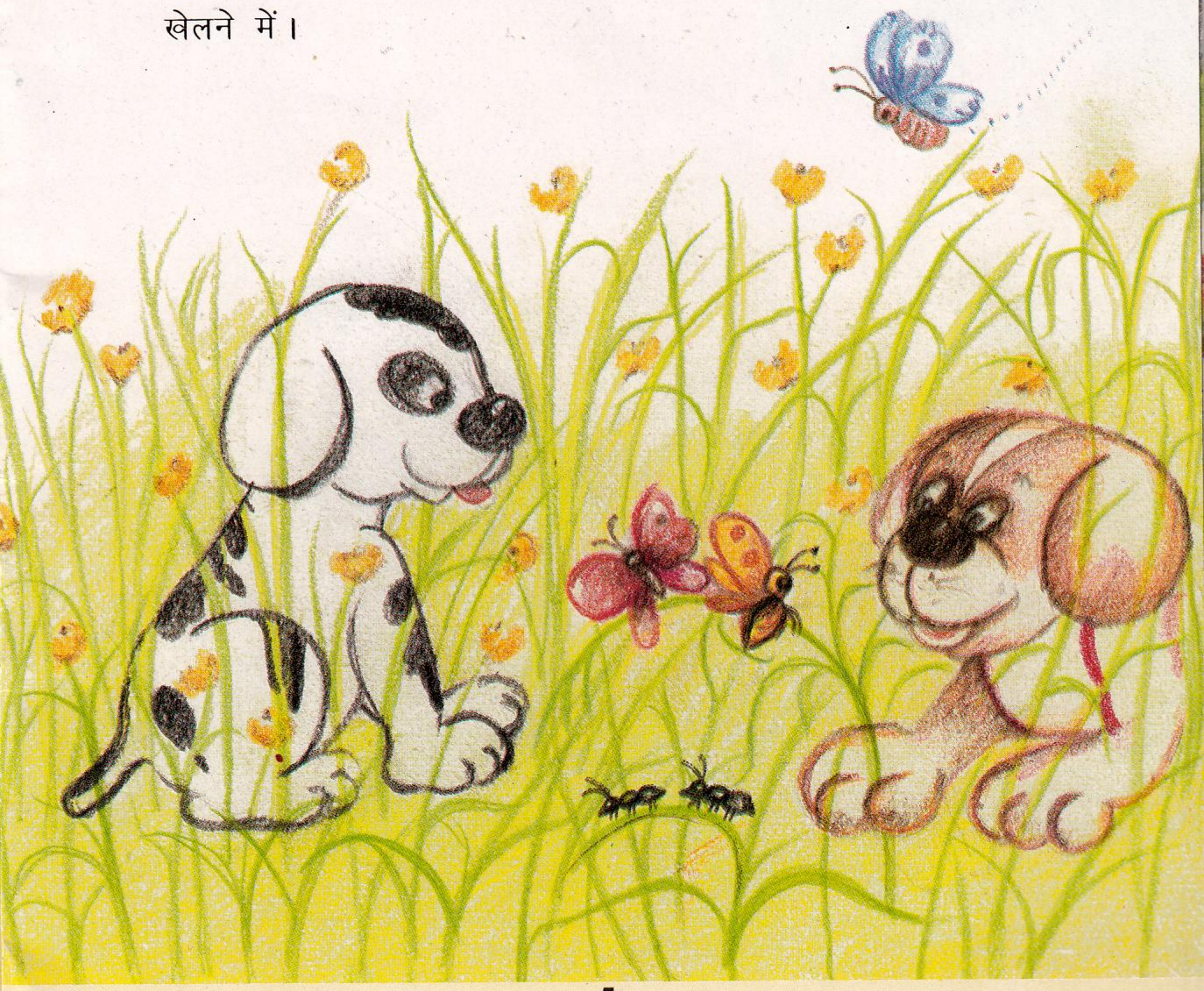

यह सोच कर दीनू तालाब की ओर दौड़ गया। हाथ में झंडे सी फहराती सरसों की डाल। तितलियों को भी बड़ा मजा आ रहा था। कुछ देर में वे फूलों का पूरा रस चूस चुकी थीं।

अब उन्हें दूसरे फूलों पर जाना होगा।

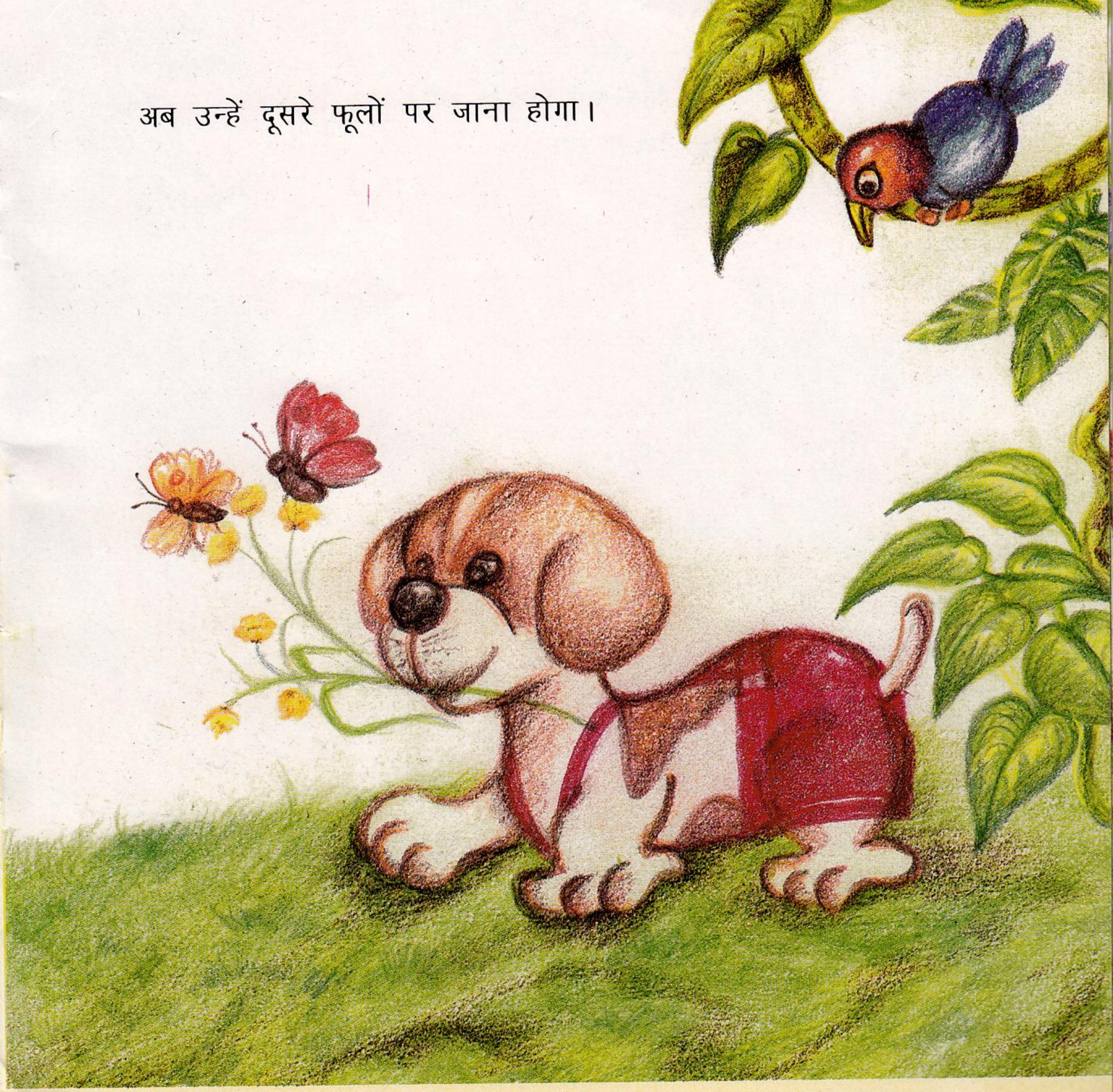

"पीलू, सुन रही हो ना, कल जरूर आना।
हम तुम्हारे लिए बहुत सारे फूल ले आएंगे।
कबरी तुम भी आना।" दीनू ने जोर से
आवाज दी। जब तक तितलियां दिखती रहीं,
दीनू उन्हें जाते हुए देखता रहा।

अब क्या किया जाए ? तभी उसकी निगाह तालाब पर गई। वाह ! मछलियां ! उसने अपने नेकर की जेब में हाथ घुमाया। कुछ लाई-मुरमुरे पड़े थे । दीनू ने एक-एक दाना तालाब में फेंकना शुरू कर दिया।

पहले एक मछली आई, फिर दूसरी भी खाने पर झपटी, और दो आ गईं। जब तक दीनू खिलाता रहा, मछलियां तालाब के बिल्कुल किनारे तक आती रहीं।

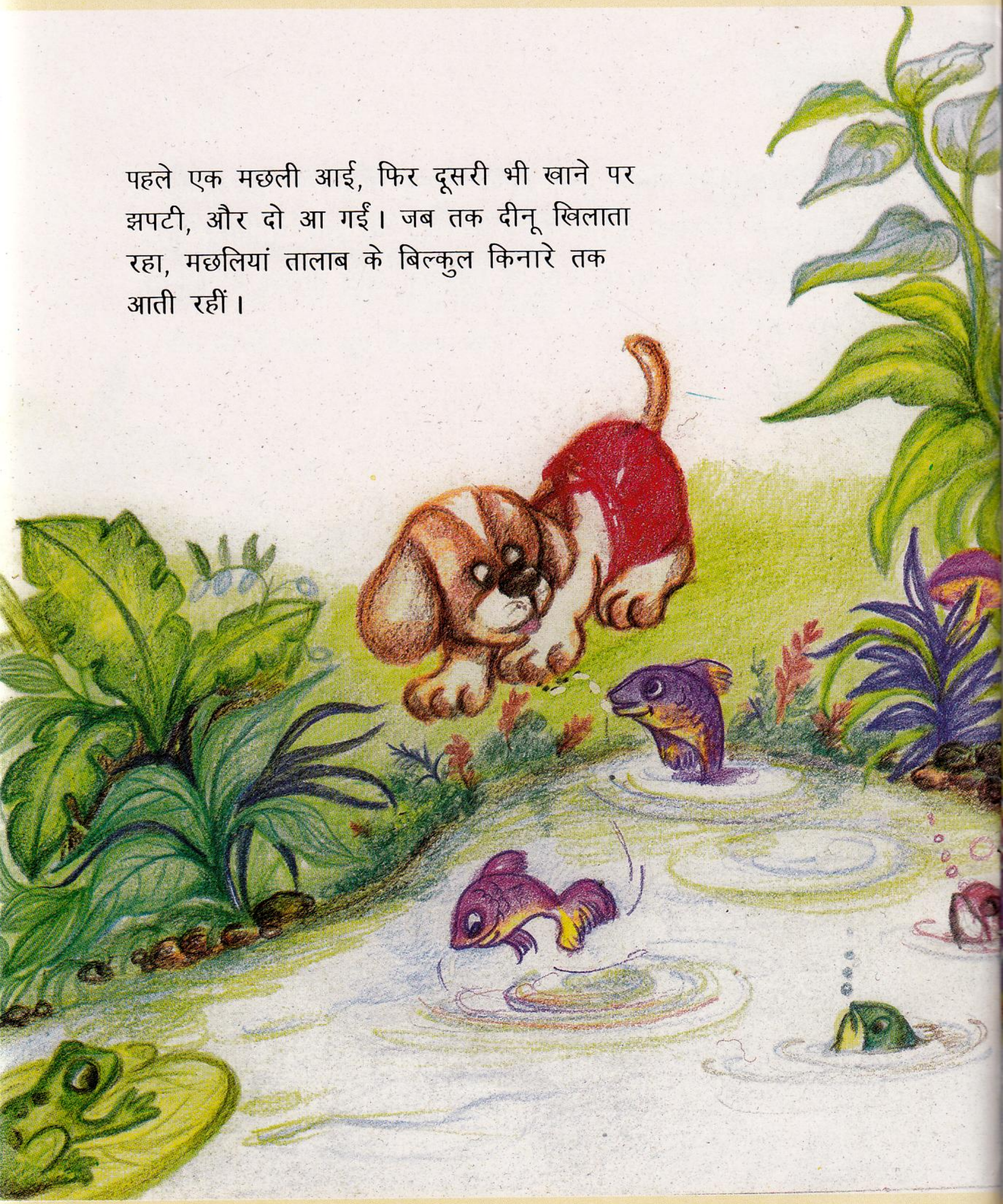

शेरू ने मछलियों को देखा और पूंछ
हिलाने लगा।

दीनू ने मछलियों के भी नाम रख दिए - मोटी, छुटकी, लंबू, चवन्नी, सपेरी और वह है सोन मछली। लाई खत्म हो गई। मछलियां कुछ देर तक मुंह उठा कर देखती रहीं। अब वे एक-एक कर तालाब में दूर जाने लगीं।

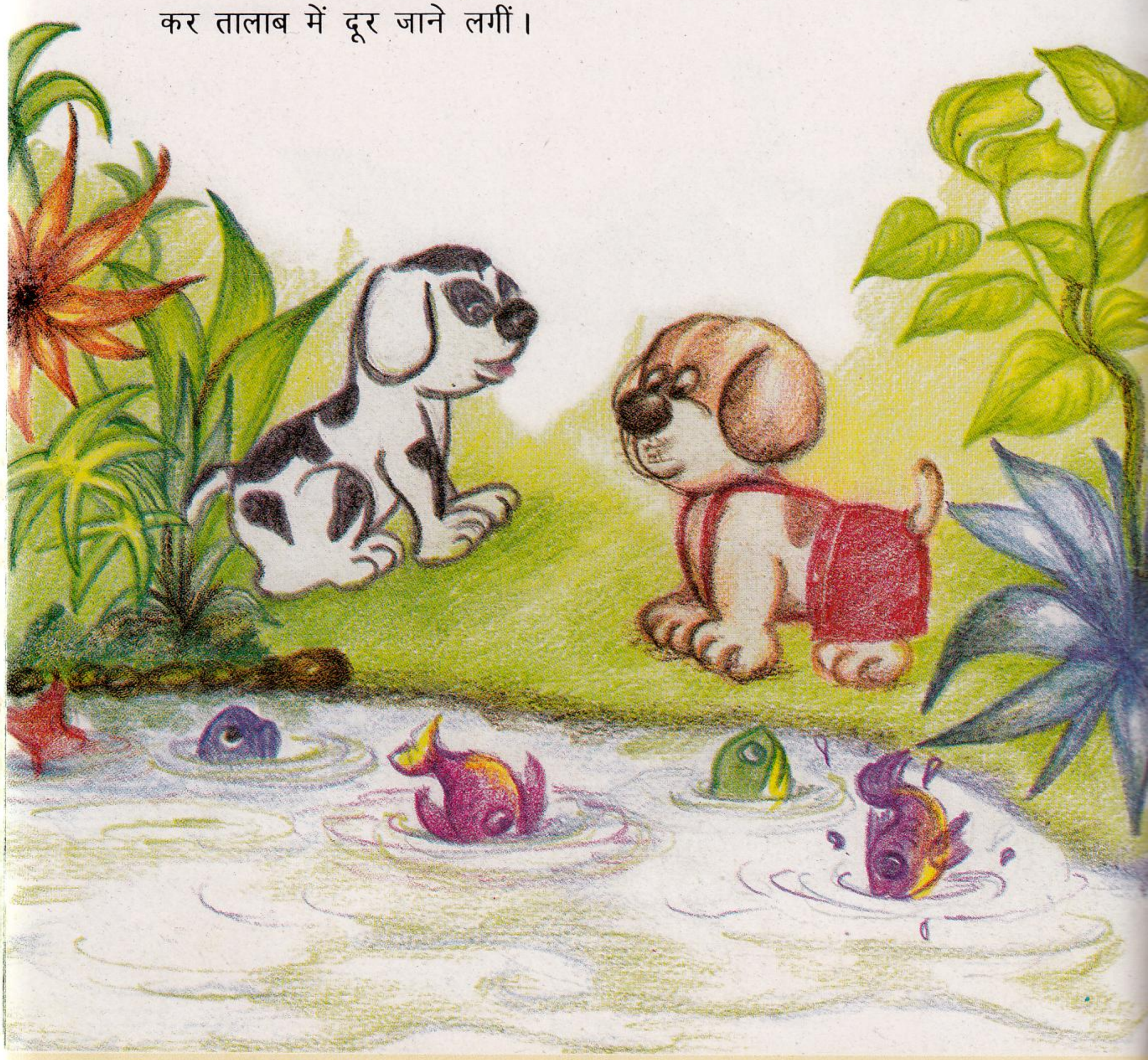

दीनू ने जोर से आवाज लगाई, "कल मैं बहुत सारी चीज लाऊंगा, खाने की । ओ लंबू ! छुटकी, चवन्नी ! कल जरूर आना।"

दीनू तालाब में उगे कमल को निहार रहा है।

अरे ! यह लाल-लाल क्या है ? अच्छा ! सूरज डूब रहा है। अंधेरा हो गया तो घर में उसकी खोज शुरू हो जाएगी।

उसने तेजी से घर की ओर दौड़
लगा दी। अब उसका मन उदास नहीं है। इतनी सारी तितलियों
और मछलियों से उसकी दोस्ती जो हो गई है।

मुद्रक : **प्रतिभा प्रेस**, लखनऊ फोन : 216754, 215858